अध्याय 8

बुन्देला विद्रोह से लेकर देश की स्वतंत्रता तक

बुन्देला विद्रोह

अंग्रेजों के अत्याचारों के विरोध में सन् 1842 में सागर में बुन्देल विद्रोह शुरू हो गया। किसानों और जनता ने विदेशियों की लूट खसोट के खिलाफ हथियार उठा लिए। शीघ्र ही विद्रोह पूरी नर्मदा घाटी में फैल गया। सागर, दमोह, जबलपुर, मण्डला, होशंगाबाद तथा चंदेरी में संघर्ष हुआ। सागर में विद्रोह नेता मधुकर शाह और जवाहर सिंह थे। वे गिरफ्तार कर लिए गए। मधुकर शाह को अंग्रेजों ने फाँसी दे दी।

1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम

सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में मध्यभारत की जनता ने जबरदस्त संघर्ष किया और असंख्य वीरों ने अपना बलिदान दिया। संघर्ष का प्रारंभ 10 मई को उत्तरप्रदेश के मेरठ से शुरू हुआ। शीघ्र ही क्रांति की ज्वाला सारे देश में फैल गई। मध्यप्रदेश, बुन्देलखण्ड, महाकोशल, मध्यभारत तथा बघेलखण्ड क्षेत्र में जनता ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। नगर-नगर और गाँव-गाँव में लोग शस्त्र लेकर अंग्रेजों से मोर्चा लेने के लिए निकल पड़े।

मध्यप्रदेश में संघर्ष के प्रमुख केन्द्र थे महाकोशल में सागर, दमोह, जबलपुर, मण्डला, नरसिंहपुर, होशंगाबाद तथा बैतूल जिले। मध्यभारत में इन्दौर, नीमच, मंदसौर, धार, महू, ग्वालियर, शिवपुरी और महीदपुर तथा विन्ध्य क्षेत्र में छतरपुर, नौगाँव, अजयगढ़ तथा सतना ने संघर्ष और बलिदान के बेजोड़ उदाहरण पेश किए। भोपाल और सीहोर भी अंग्रेजों के विरुद्ध मोर्चा लेने में पीछे नहीं थे।

क्रांति के प्रमुख नेताओं में मण्डला, डिण्डोरी में रामगढ़ की रानी अवंतिबाई, विजय राघवगढ़ के ठाकुर सरजू प्रसाद, जबलपुर में रानी दुर्गावती के वंशज शंकर शाह और रघुनाथ शाह, हिन्डोरिया-दमोह के ठाकुर किशोरसिंह, चंदेरी, बानपुर के राजा मर्दन सिंह, नरसिंहपुर के ढेलन शाह और मेहरबान सिंह, सागर के सूबेदार शेख रमजान शामिल थे। विन्ध्य क्षेत्र में ठाकुर रणमत सिंह, छतरपुर के हिन्दुपत तथा अजयगढ़ के फरजंद अली प्रमुख थे। मध्यभारत क्षेत्र में इंदौर में सादत खान और बंसगोपाल, मंदसौर के शाहजादा फीरोजशाह, अमझेरा के राजा बख्तावर सिंह।

क्रांतिवीरो को महान सेनानायक तात्या टोपे तथा रानी लक्ष्मीबाई का नेतृत्व भी प्राप्त था। रानी लक्ष्मीबाई अंग्रेजों से संघर्ष करते हुए ग्वालियर में शहीद हो गईं थीं। तात्याटोपे को अंग्रेजों ने शिवपुरी में फाँसी दे दी थी। संघर्ष और आंदोलनों का दौर था।

सन् 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के साथ ही देश में जागरुकता फैलने लगी। जनता गुलामी से मुक्ति के लिए एक बार फिर संघर्ष के लिए तैयार होने लगे।

मध्यप्रदेश में आंदोलनों की शुरुआत 1905 में हो गई थी। 'बंगाल विभाजन' के विरोध में और 'स्वदेशी' वस्तुओं को अपनाने और विदेशी वस्तुओं के 'वहिष्कार' का आंदोलन अनेक शहरों में चलाया गया। 1920 तक देश में आंदोलन केनेता थे बाल गंगाधर तिलक।

महात्मा गांधी के नेतृत्व में देश में चार आंदोलन हुए। पहला 1920–21 में 'असहयोग आंदोलन'। उसके बाद 1930–32 में 'सविनय अवज्ञा आंदोलन'। फिर 1940 में 'व्यक्तिगत सत्याग्रह' और अंतिम बड़ा संघर्ष 1942 में 'भारत छोड़ो आदोंलन'। सन् 1930–32 का आंदोलन 'नमक सत्याग्रह' भी कहलाता है। नमक तो समुद्र के किनारे ही बन सकता है। अत: मध्यप्रदेश क्षेत्र में कांग्रेस की विशेष अनुमति से 'जंगल सत्याग्रह' चलाया गया, जो बैतूल क्षेत्र मे बहुत सक्रिय रहा।

प्रत्येक आंदोलन में बड़ी संख्या में लोग जेल गए। जागृति फैलने से एक–के–बाद दूसरे आंदोलन में गिरफ्तारी देने वाले देशभक्तों की संख्या बढ़ती जाती थी। आ़जादी के लिए हजारों ने सीने पर लाठी की चोटें सहीं और सैकड़ों गोली खाकर शहीद हो गए। देश को जगाने में क्रांतिकारी आंदोलन का भी बड़ा योगदान है। सरदार भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद, चाफेकर बन्धुओं, बंगाल के मास्टर सूर्यसेन, अशफाकउल्ला, राम प्रसाद विस्मिल गदर पार्टी के क्रांतिकारियों आदि का बलिदान और योगदान देश कभी भुला नहीं सकता।

स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख नेताओं में गांधी जी तथा तिलक जी के सिवाय अनेक बड़े नेता थे। उनमें प्रमुख थे दादाभाई नौरोजी, पं. मोतीलाल नेहरू, पं. मदन मोहन मालवीय, लाला लालपत राय, पं. जवाहरलाल नेहरू, सरदार बल्लभ भाई पटेल, एनी बेसेंट, सुभाष चंद बोस, खान अब्दुल गफ्फार खान, चक्रवर्ती राजगोपाला चारी, सरोजनी नायडू, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद आदि।

अभ्यास प्रश्न

लघुत्तरीय प्रश्न–

प्रश्न–1 मध्यप्रदेश में बुंदेला विद्रोह कहाँ शुरू हुआ व उसका क्या प्रभाव रहा?

प्रश्न–2 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में मध्यप्रदेश के प्रमुख क्रांतिवीर व सेना नायकों का उल्लेख कीजिए।

प्रश्न–3 जंगल सत्याग्रह किस क्षेत्र में सक्रिय था?